सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU
TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 99

श्री साई शके : 29–30
अक्टूबर – 2010

ॐ

ॐ श्री साईनाथाय नमः
ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
Dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-World.com

Parton
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.100.00
Life time : Rs.500.00

Overseas
Yearly : US$ 50.00
Life time : US$ 200.00

Printed By
Pritha Offsets Pvt. Ltd.
Cell: 09810166033

Published Every Month
©All rights reserved with Publisher

विजया दशमी (सीमालांघन)

श्री साई शके – 29 शुभारम्भ

आज फिर हर साल की तरह श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था के शक्ति केन्द्र "साई निकेतन" में श्री जगतगुरू परम् पूज्य श्री साईनाथ महाराज की 92 (बाँनवीं) पुण्यतिथि तथा शुभ दिन व अवतरित उत्सव मनाने तथा पिन्ड पर परम् पूज्यनीय बाबा के मानव कल्याण के कार्य, जो कि श्री सद्गुरूनाथ दत्तात्रय भागवत (परम् पूज्य दादा महाराज) के माध्यम द्वारा सिद्ध हुआ। वह सिद्ध कार्य पूर्ण जगत की मानव जाति को इन शक्ति केन्द्रों द्वारा अपने में समा ले – ऐसा महाअखंड गुरूकृपा आशीर्वाद से यहाँ सभी एकत्रित हुए तथा दुनिया के सभी सेवकों को प्राप्त हो। ऐसी श्री जगतगुरू साईनाथ नाथ महाराज दादा महाराज, श्री देवी देवता, नवनाथ आदि पुण्य विभूतियों के पवित्र चरणों में विनम्र प्रार्थना।

औदुम्बर में एक दफा वं० दादा महाराज से श्री गुरु दत्त महाराज जी ने कहा "जो नदी बह रही है उसे प्रवाह (बहाव) कहते है। वह बहता रहता है – बोध (ज्ञान) हुआ तो प्रवाह (बहाव) से प्रवास (यात्रा) बनेगा और प्रवास के 'प्र' शब्द को प्रेम देने से 'वास' स्थिर (कायम) रहेगा (अर्थात प्रवास कायम रहेगा) वर्ना तुम इस प्रवाह में बहते–बहते समुंद्र में समा जाओगे। समुंद्र में गए तो वहाँ पानी खारा है जिसका सृष्टि (प्रकृति/दुनिया) के लिए कोई उपयोग नहीं है। और सृष्टि तो प्यासी है। इसलिए इसका योग विचार करो। नदी थीं जो काठ (किनारा) देख रहे हो उसकी लाठी बनाओं। बाद में दुनिया में चलने के लिए वहीं लाठी काम आएगी। यह जगत जैसा दिखाई देता है वैसा है नहीं। तुम अपनी सेवा का हिसाब स्वयं रोज लगाओ। अर्थात जगत ने क्या दिया और साधक की हैसियत से तुमने क्या पाया और भगवान ने तुमसे दुनिया को क्या दिलवाया।

क्योंकि प्रपंच (पारीवारिक जीवन) और परमार्थ (आध्यात्मिक जीवन) में धर्म श्रेष्ठ या कर्त्तव्य श्रेष्ठ है। तब श्री दत्तगुरू ने यह "मार्गदर्शन" किया। मागदर्शन में "मार्ग" यह एक भाग और "दर्शन" दूसरा भाग है। जब मनुष्य कर्म के कारण इहलोक में जन्म लेता है तब जन्म का कारण परलोक में होता है। और मनुष्य को कर्म का फल प्राप्त नहीं होता और जब मनुष्य के जन्म का विकास होता है तब धर्म मनुष्य के आधीन

हो जाता है। प्रकृति में यह कार्य परम पूज्यनीय बाबा व दादा ने सिद्ध किया है। इसी को सीमोलांघन कहते हैं। इस अवस्था को गुरुमार्ग में "मार्ग" यह एक भाग और "दर्शन" यह एक भाग, ऐसा कहते है। दर्शन होने का मतलब दिखाई देना ऐसा नहीं ज्ञान प्राप्त होना है। अर्थात गुरुमार्ग में जो अज्ञात था वह ज्ञात होना इसका ध्यान साधक को रोज समझना आवश्यक है। जब कोई दुःखी, कष्टी अपना दुःख बताता है तब उसे दुःख और सुख दिखाई देने वाला कितना है और नहीं दिखाई देने वाला कितना है? यह समझकर उसे मार्गदर्शन करके सेवा बताना और उसी समय उसको आशीर्वाद भी प्राप्त हो यह अत्यन्त आवश्यक है।

आज परमपूज्य बाबा व दादा देहरुप में इहलोक में नहीं हैं फिर भी उनकी निराधार शक्ति जो कि सर्वव्यापी है जिसका मुख्य केन्द्र गौवा पंजिम में स्थापित है और उसी के अनेक केन्द्र सिर्फ भारतवर्ष में ही नहीं दुनिया के कई शहरों में है जिनके द्वारा अब बाबा व दादा के पिछले 2500 सालों का कार्य जो कि अब कुछ लिखे हुए सिद्ध साधनों व परमपूज्य बाबा/दादा द्वारा नियुक्त साधकों के माध्यम से आगे भी अजरामर रहेगा – क्योंकि आज भी आज की अवस्था ऐसी है जो बृह्माण्ड में है वही पिण्ड पर भी है तथा दोनों के लेन–देन श्री शक्ति–पीठशक्ति, स्वरुप केन्द्र, प्रतिमाओं, सिद्ध साधन, सभी देवी–देवता और धर्मों में एकरूपता है। तथा सभी का सिद्ध स्वरुप शक्तिपीठ में है, जो कि आगे आने वाले समय में इस दुनिया को सम्भाल लेगी।

परम् पूज्यनीय बाबा ने कार्य के शुरु में केन्द्र पर आने वाले भक्तों का सबसे पहले काया–बाचा–मन को एक रुप किया, इसके बाद दोषों के, पिछले जन्मों के दोषों को विमोचित किया, उनको दीक्षाएँ दीं तथा देह के 19 माध्यम सिद्ध किए। गुरुदीक्षा, श्री कारण तथा, श्री महाकारण इत्यादि जो मुख्य है।

सृष्टि की रचना का मूल स्रोत "ॐ" है यानी तेज (एनर्जी) और रौशनी (लाईट)। इसकी तीन अवस्थाएँ है "अ" उत्पत्ति, "उ" स्थिति, "म" लय यानी बृह्मा–विष्णु–महेश जो कि बृह्म है अनन्त है इस अवस्था का लाभ मानव समाज को कैसे हो इसका परम् पूज्यनीय दादाजी ने शिव अवतार श्री गोरखनाथ जी के माध्यम से लेकर सिद्ध साधनों में की है तथा भक्तों तक इस सिद्ध साधन की पहचान आगे साधकों के माध्यम से की है।

"शक्तिपीठ का तीसरा तप"

शक्तिपीठ स्थापना का यह तीसरा तप सम्पूर्ण विश्व के लिए जितना महत्वपूर्ण है उतना ही इस विश्व का अंश होने के नाते हम गुरू भक्त इस विश्व के प्रति कौनसा कर्तव्य निभा रहे हैं यह सोचना हर गुरू भक्त के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा अत्यंत मुश्किल भी है क्योंकि इस विश्व की उत्पत्ति जिस शक्ति से हुई है उस शक्ति का न आरम्भ है न हीं अन्त है। इसीलिए परमपूज्य श्री पंत महाराज जी ने गुरू भक्तों को यह चेतावनी दी है कि :

"आरम्भ नाही शेवट कैसा मध्यास्थितिला विसरू न को, संसामध्ये एक ही पाऊल अनुभबाविण टाकू न को"

अर्थात आरम्भ नहीं है अंत भी नहीं है इसलिए किसी ने भी मध्य (Middle) स्थिति को भूलना नहीं चाहिए। और सदैव परमेश्वर को स्मरण करते रहकर श्री परमेश्वर के अनुभव के बिना इस संसार में, इस जगत में एक कदम भी चलना नहीं चाहिए।

वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार जिस वस्तुमात्र का आरम्भ है उसे अंत भी है ही तथा जिस वस्तुमात्र का अंत होता है उसका आरम्भ भी कहीं न कहीं से हुआ होता ही है। लेकिन जिस शक्ति माध्यम से इस विश्व का निर्माण हुआ है वह शक्ति स्वयं में पूर्ण है इसलिए उसका न आदि है और न ही अंत है। इस शक्ति का अस्तित्व मध्य इस अवस्था में है जैसे नदी का प्रवाह उसकी मध्य अवस्था में ही विस्तरीत होता है उसी प्रकार इस बृह्माण्ड की शक्ति का प्रवाह भी उसकी मध्य अवस्था में पूरे सचराचर सृष्टि को समाए हुए है। और इस अवस्था का अनुभव लेना इसका का अर्थ है "मानवीं धर्म का उदय होना" इस अवस्था का अनुभव साधक के लिए अत्यन्त अनमोल होना है।

साधना के दौरान उच्चारण के बाद जो मध्य अवस्था का उद्गम होता है उसी में साधक को अपना जीवन सूरमय बनाने का अवसर प्राप्त होता है। तथा जीवन को सूरमय बनाने के लिए दूसरों के जीवन में आनन्द निर्माण करना यही मनुष्य जीवन का असली रुप है।

इस संसार में आने के बाद आत्मा इस संसार के विभिन्न विषयों की पहचान सहजता से कर लेती है। मगर उन सारे विषयों में ही वह अपने जीवन के ध्येय का विषय भी चुन लेती है। लेकिन केवल विषय चुन लेने से जीवन की सार्थकता नहीं होती है, क्योंकि मुनष्य का मन बड़ा अस्थिर होता है, जिस विषय को वह ध्येय मान लेता है उससे पूरी तरह अनुभव प्राप्त करने के पहले ही वह दूसरे विषयों को अपनाता है और इसके कारण ही वह किसी भी विषय में सुख–शांति तथा समाधान प्राप्त नहीं कर सकता है और तब उसे यह महसूस होता है कि वह निराधार है। उसका जीवन दुश्वार है। इस प्रकार वह अपने जीवन के प्रमुख विषय से और भी दूर जाने लगता है। मनुष्य के जीवन का प्रमुख विषय है, मानवी जीवन को इसी जन्म में सार्थक कर लेना। जिसके लिए पृथ्वी पर जन्म लिए हर प्राणी मात्र के जीवन में एक निश्चित विषय का होना आवश्यक है जिसे "जन्मकारण" कहते है। जो पहले जमाने में प्रत्येक राष्ट्रभिमानी व्यक्ति के लिए उसका अपना राष्ट्र था।

आजतक इस जगत के प्रत्येक राष्ट्र के हजारों राष्ट्रभिमानी बाल, युवा, वृद्ध भूमि पुत्रों ने अपने राष्ट्र की तथा विश्व की उन्नति के लिए अपना जीवन सर्वस्व समर्पण करते समय अपना पारीवारिक जीवन और उस में से सुख सम्पत्ति, शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि सभी का त्याग करके अपनी अगली पीढ़ी के हाथों में उन्नत विश्व की धरोहर सौंपी है इसलिए इसमें एक बात महत्वपूर्ण है कि त्याग और बलिदान से प्राप्त हुई यह धरोहर जतन करने के लिए भी त्याग और बलिदान की ही जरूरत है। विकास की नींव सब के निस्वार्थ प्रयत्नों से ही डाली जा सकती है विभुतियों के इस निस्वार्थ तथा प० पू. दादा जी के अथक परिश्रम उन्हीं के कहने के अनुसार इस विश्व को उन्नत बनाने के लिए, विश्व के नागरिक के नाते प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्त्तव्य निस्वार्थ और निर्पेक्ष भावना से निभाने का संकल्प करना अत्यन्त आवश्यक है गुरूभक्त के नाते साधक का कर्त्तव्य है कि प० पू. बाबा और दादाजी का संकल्पित कार्य पूर्णरूप से यशस्वी हो। क्योंकि इस मानव कल्याण के कार्य में हमारे भारतवर्ष का योगदान बहुत आवश्यक मायने रखता है।

हमारे भारतवर्ष की परम्परा अति प्राचीन है दुनिया के अन्य स्थानों में जब मानव जंगली जीवन व्यतीत करते थे तब भारत में ऋषि–मुनिजन मानव कल्याण के लिए यज्ञ कर रहे थे मानवीय जीवन मीमांसा का अध्ययन करके मनुष्य को जीवन सार्थकता का मार्ग दिखा रहे थे इसी प्रकार आज भी जब दुनिया के अन्य राष्ट्र अपने नित्य नए आविष्कारों से दुनिया को भौतिक सुख देने का कार्य कर रहे है तब दुनिया को अध्यात्म सम्पत्ति भी देने की जिम्मेदारी हमारे भारत की है और यही निचोड़ हमारे जगतगुरू साईनाथ महाराज तथा सद्गुरू नाथ दादा महाराज की कार्य और कार्य पद्धति का है। तथा इसी निस्वार्थ कार्य में मानवता, धर्म तथा विश्व शांति का संदेश है। परम पूज्यनीय बाबा व वंदनीय दादा तथा पुण्य विभूतियों के अनुसार यह जिम्मेदारी असल में भारत के प्रत्येक नागरिक की है तथा गुरूकृपा से विकसित हुए हम गुरूभक्तों की सब से अधिक है क्योंकि आज हम गुरूभक्त गुरूमार्ग का अवलम्ब करके अपना गुरू संस्कारित जीवन जी रहे है। अतः जिस मार्ग ने हमें अपना विकास आध्यात्मिक मार्ग द्वारा करने का बोध दिया है उस गुरूमार्ग के सदस्य बनने के बाद "विश्व के अंश" इस नाते विश्व के प्रति हमारी जिम्मेदारी विशेष है। तथा इस से भी बड़ी जिम्मेदारी गुरूभक्तों की है अगली पीढ़ी का मार्गदर्शन करके उन्हें विश्व के सुयोग नागरिक को सही दिशा दिखाना।

इस अलौकिक गुरूशक्ति का लाभ आज भक्तों को प्राप्त हुआ है, नाजायज बातें, राज्यकर्ताओं की आलोचना तथा राजकाज के बारे में व्यर्थ चर्चा करने में गुरूशक्ति का व्यय न होने देकर उसका उपयोग विश्व के प्रत्येक राष्ट्र के राज्यकर्ताओं के सदगुणों को विकसित करने के सदविचार कर के गुरूशक्ति की लहरें प्रत्येक राष्ट्र के राज्यकर्ताओं तक पहुँचाना यह हम गुरूभक्तों का कर्त्तव्य है जिसके लिए परमपूज्यनीय बाबा/दादा की दी हुई प्रतिमाएँ जो कि पूरे विश्व में सर्वव्यापी है खुद–ब–खुद कार्य करेगी।

परमपूज्यनीय बाबा, वंदनीय श्री सद्गुरूनाथ दादा तथा पुण्य विभूतियों का यह लोक कल्याण कार्य परिवार से समाज तक, समाज से राष्ट्र तक तथा राष्ट्र से दुनिया तक सम्पूर्ण विश्व को समा लेने वाला है इसलिए उन्होंने हमें जब कल्याण के लिए शक्तिपीठ की प्रार्थना दी है जिस से जगत में मानवीय धर्म का उदय होकर मानवीय जीवन ईश्वरमय हो इसलिए आज हम सब मिलकर यह प्रार्थना करते है :

"विश्व शांति के लिए प्रार्थना"

हे भगवान! विश्व के उद्धार के लिए जो महान विभुतियाँ, विश्व के लिए त्याग और बलिदान करने वाले राष्ट्रपुरूष तथा नेता, जो स्वयं कष्ट सह कर भी हर पल जूझ रहे हैं। उनके उपदेशों तथा आदेशानुसार हमारा आचरण पवित्र हो, ऐसी कृपा कीजिए।

अब तक हमारे द्वारा किए गए पापों तथा प्रमादों की पुनरावृति न हो। विकट, आर्थिक तथा अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण परेशान होकर तथा क्षुद्र मनोविकारों के अधीन हेकर अथवा संकुचित विचारों से वशीभूत होकर हमारे मन में आलस्य, अज्ञान या अनुकरणवश उन विभूति, राष्ट्रपुरूष एवं नेताओं के प्रति अयोग्य विचार आए हों, अथवा अयोग्य उच्चार हमारे मुहँ से निकले हों, या उनके आदेशों के विपरीत कोई भी कार्य हुआ हो तो उसके लिए, उन सबके प्रति मैं आपकी तथा उन सबकी निस्पृह भाव से क्षमा चाहता/चाहती हूँ। विश्व में सदा सुख, शांति, संतोष, तथा विश्व के नागरिकों में एक दूसरे के प्रति ममता और आनन्द हमेशा बना रहे। उसी प्रकार विश्व के प्रति अटूट श्रद्धा हम सब के ह्रदय में सदा जागृत रहे।

उन्होंने सोचा हुआ विश्व-उन्नति का महान कार्य, हम अपने शेष जीवन में पूरा करने में यशस्वी हों सकें तथा अन्य भी अनेक सामाजिक सत्कृत्य करते रहें। इस प्रकार वे महान दिंव्य अलोकिक विभूतियाँ और राष्ट्रपुरूष हम पर सदा खुश रहें तथा विश्व पर आपकी कृपादृष्टि इसी तरह बनी रहे।

हे प्रभु! हमारे परिवार के सभी सदस्यों को विश्व के प्रति अपना-अपना कर्त्तव्य कर्म निभाने की बुद्धि दीजिए। दुनिया के कई राष्ट्र आज सुख-समृद्धि का अनुभव ले रहे है, फिर भी "विश्व उन्नति का कर्त्तव्य हर एक नागरिक पूरे प्रयत्नों से करे" इस पवित्र वचन से आपने संसार को जो पाठ पढ़ाया है, उसके अनुसार तथा विश्व के लिए बलि चढ़े हुए वीर पुरूषों के उपकारों का बदला अपकारों से न हो ऐसी बुद्धि, हे दयानिधान, विश्व के सभी व्यक्तियों को आप दीजिए, केवल इतनी ही दुआ आपके चरणों में अत्यंत दीन भाव से हम गुरूबंधु-भगिनि माँग रहे हैं।

अन्त में आप सब गुरूभक्तों अथवा देशवासियों से एक विनती है कि कम से कम सप्ताह में एक बार (गुरूवार या मंगलवार को) अवश्य ही अपनी रोजना की पूजा में इस प्रार्थना को सम्मिलित करें ताकि श्री जगतगुरू साईनाथ महाराज की यह अलौकिक मानव कल्याण का कार्य यशस्वी हो।

"शुभम् भवत्"

जन्म जन्म का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरूबंधू एवं भागिनीयों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका ''तत्व बोध'' की अगली अंक एवं अन्य कार्यक्रम की सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित किया जाएगा।

अतः आप सभी गुरूबंधू एवं भागिनीयों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई-मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :-

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 1100 25 Telephone : 26955261

E - mail : saikalp@gmail.com Dadab6@gmail.com

SHAKTIPEETH

"SAI VACHAN"

All types of energies in the world have been collected, integrated, and put in this seat of energy (Shaktipeeth) which is the throne of God.

It will remain safe and be preserved for all eternity.

I have no faith in man. He may change any time, Hence, the energy itself is safely placed in the Earth.

If you are born with faith, the energy will flow into you.

A time will come when you have to choose between the command of God, and the suggestions of society.

If you follow the suggestions of society, God will not follow you.

However, if you follow God, then society is bound to follow you.

Today, I am the source of all the-isms (An-ism is a school of thought, such as Hinduism, Buddhism, etc.), Just as the trunk of the tree supports all branches.

And, as I am the trunk, the Shaktipeeth is the root of all the world.

You may ask me any question about material, things but henceforth, I will only give you spirtual answers.

I have taken a number of births on Earth, and worked diligently between these births, to establish the Shaktipeeth for all of mankind.